ANUŚILANA, Vol. LXXX, Year 2018, ISSN 0973-8762

61

भारत–बांग्लादेश संबंध : समस्याएँ और चुनौतियाँ

डॉ0 आभा सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीतिक विज्ञान, विभाग, कु0 मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर

किसी भी देश की ताकत को नापने का कोई पैमाना नहीं होता जो भौतिक स्तर पर प्रमाणित हो। इसलिए आवश्यक होता है कि भौगोलिक विशेषताएँ, आकार एवम् स्वरूप का ध्यान रखा जाये। समस्त पृथ्वी और उसके प्राकृतिक तत्त्व, मानव–समुदाय, उसके क्रियाकलाप एवं सांस्कृतिक उन्नति विकास के रास्ते का मार्ग प्रशस्त करती है और भूगोल की निर्मित करती है। किसी भी देश का फैलाव जिन भी कारकों से तय होता है उनमें जनसंख्या, समुद्र, पर्वत, वन और रेगिस्तान पर मुख्य रूप से निर्भर करता है। जब किसी भी देश की सीमाएँ प्राकृतिक आपदाओं से संत्रस्त होती है तो अनायास ही राष्ट्र की सैन्य शक्ति बढ़ जाती है। इन्हीं चीजों को ध्यान में रखकर कोई भी देश अपनी सैन्य एवम् सुरक्षा की नीतियों को तय करता है।

भारत की स्थिति कुछ ऐसी है कि इसके तीनों तरफ महासागरों का जाल है। पाकिस्तान और बांग्लादेश के एक ही तरफ समुद्र अवस्थित है। वास्तव में किसी भी राष्ट्र के सैन्य शक्ति के निर्धारण में इन भौगोलिक कारकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इन राष्ट्रों की समृद्धि, यातायात, व्यापार एवं युद्ध खासतौर पर इन समुद्रों के उपयोग से जुड़े हैं जो उनके भू–प्रदेशों को घेरे हुए है।[1] भारत और बांग्लादेश की सीमा पर कोई प्राकृतिक अवरोध नहीं है। इस कारण भारत जैसे विशाल देश से अपने अच्छे सम्बन्ध स्थापित करके उसके भौगोलिक समृद्धि का लाभ उठा सकता है। यदि हम विश्व मानचित्र पर भारत की भौगोलिक स्थिति देखें तो यह प्रकृति एवं खनिज सम्पदा से इस तरह परिपूर्ण है कि बांग्लादेश की सामरिक एवं आर्थिक सुरक्षा के लिए किसी अन्य देश के मदद की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी।[2]

बांग्लादेश अपने भौगोलिक स्थिति के कारण भारत पर हमेशा ही निर्भर रहेगा। क्योंकि कोई भी राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में भौगोलिक परिस्थितियों को तिरस्कार करके अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा नहीं कर सकता है। भारत दक्षिण पूर्व एशिया एवं मध्य पूर्व एशिया का द्वार है यदि दक्षिण एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, खाड़ी क्षेत्र, पश्चिम एशिया और हिन्द महासागर में कोई घटना घटित होती है तो भारत अपनी आंखे मूंद कर नही रह सकता।[3] इस सिद्धांत को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि बांग्लादेश भारत से शत्रुता का भाव रखकर अपना अंतर्राष्ट्रीय अस्तित्व नहीं रख सकता है।

भारतीय उद्गम स्थल के नदियों का अंतिम छोर बांग्लादेश में ही आकर गिरता है। जिसके कारण बांग्लादेश का अधिकांश भाग डेल्टाई क्षेत्र है।